Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 14-05-2024, Accepted: 06-06-2024, Published: 29-06-2024
Volume 5, Issue 1, 2024, Page No. 14-15

सांस्कृतिक विविधताओं एवं विशेषताओं की प्रतीक हरियाणवी लोरियां

महासिंह पूनिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आई.आई. एच.एस., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
हरियाणा एक सांस्कृतिक प्रदेश है। इस प्रदेश की परम्परा एवं सांस्कृतिक विविधताएं यहां की सांस्कृतिक विरासत का परिचयक है। लोरी वह संगीतात्मक एवं ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति है जिसके माध्यम से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तो होती ही है इसके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक प्रमाण भी प्रस्तुत होते हैं। लोरी वे गीत हैं जो स्त्रियाँ छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं, वास्तव में लोरी गीत माँ बच्चे को सुलाने के लिए हल्की आवाज में गाती है। लोरी हरियाणवीं लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोरियों से जहां एक और बच्चों में एक संस्कारों का समावेश होता है, वहीं पर दूसरी ओर आँचलिक संस्कृति की अभिव्यक्ति भी होती है। हरियाणवीं लोरियों में अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं। जिनको हरियाणवीं लोरियों की आत्मा कही जा सकती हैं। इस प्रकार हरियाणवी लोरियां सांस्कृतिक विविधताओं एवं विशेषताओं की परिचायक हैं। लोक सांस्कृतिक दृष्टि से लोरियां मनोवैज्ञानिक वह गीत हैं जिनको महिलाएं अपने बच्चों को सुलाने के लिए प्रयोग में लाती हैं। वास्तव में आंचलिक संस्कृति का यह वो खजाना है जिसके माध्यम से लोक सांस्कृतिक परम्पराओं में छिपे हुए लोरी गीतों की अभिव्यक्ति होती है। हरियाणा के अंचल में अनेक प्रकार की लोरियां गाई जाती रही हैं। इन लोरियों की विशेषताओं में विविधात्मकता, भावनात्मकता, मनोरंजनात्मकता, संगीतात्मकता, गेयात्मकता, काल्पनिकता, नाट्यकीयता, लोकविश्वासनीयता, आंचलिकता, ध्वन्यात्मकता, तुकान्तता, सौम्यता, मनोवैज्ञानिकता, समन्वयता एवं प्रतीकात्मकता आदि शामिल हैं।

मूल शब्दः टाल्ली, छनण, कुक्कड़म, झल्लड़–मल्लड़, घम्मड़, छमक–छमक, ठमक–ठमक, छुन्नक–छुन्नक, लल्ला–लल्ला, लोरी, लापरी, टापरी

सांस्कृतिक विशेषताएं

विविधात्मकताः लोरी के कुछ विषय पारिवारिक और सामाजिक विकास तथा परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं, परंतु कुछ विषय शाश्वत हैं। बालक की कुशलता, आयु, वृद्धि, रूप, लावण्य, सहज–किल्लोल और चेष्टाएं लोरी के शाश्वत विषय हैं।

झल्लड़ मल्लड़ दूध बिलोवै,
जाटणी का छोरा रोवै।
रोवै सै तो रोंवण दे,
मन्नैं दूध बिलोंवण दे।। [1]

भावनात्मकताः लोरी मूलतरू माँ के स्नेह, प्यार, दूलार और वात्सल्यता की सहज अभिव्यक्ति है। इसके माध्यम से प्रत्येक शब्द में, अभिव्यक्ति में, आह में, अहसास में, भाव की प्रधानता होती है। यही कारण है कि लोरी की प्रत्येक अभिव्यक्ति में भावनात्मक पुट देखने को मिलता है।

पायां में पैंजणियां लाल्ला, छुन्नक–छुन्नक डोल्लैगा।
हरी जरी की टोपली, बजार सूई डोल्लैगा।

मनोरंजनात्मकताः स्वाभाविक है कि लोरियों का मूल उद्देश्य शिशु का दिल बहलाना है। माँ का स्नेह बच्चे को सुलाने के लिए अभिव्यक्ति का जो स्वरूप प्रस्तुत करता है, वह लोरी ही होता है। लोरी जहां एक ओर बच्चे को मनोरंजनात्मकता का लाभ प्रदान करती है, वहीं पर दूसरी तरफ उसे सुलाने का कार्य भी करती है।

ओड बात, गधे नै मारी लात,
गधा कह मेरै पूंछ कोन्या,

संगीतात्मकताः लोक भावना को जब लय प्रदान की जाती है, तो वह गीत का रूप धारण कर लेती है। स्वर और शब्द के अतिरिक्त लोरी गीतों की लय भी महत्वपूर्ण है। लोरी गीतों में लय के समावेश की पृष्ठभूमि में मनोवैज्ञानिक कारण हैं।

लाला लाला लोरी,
दूध की कटोरी।

गेयात्मकताः लोरी और गायन का परस्पर गहरा सम्बन्ध है गायन के माध्यम से ही लोरी की सार्थकता एवं कसौटी अधिक बढ़ जाती है। ग्रामीण आँचल में माँ अपनी मनोभावनाओं को गाकर शिशु के प्रति अपने वात्सल्य एवं स्नेह की अभिव्यक्ति तो प्रदान करती ही है, साथ में लोकगायकी की अपनी प्रस्तुति को ब्यान भी करती है।

ललण रे, ललणियां रे,
बारह गज का तणियां रे।

काल्पनिकताः माँ लोरी के माध्यम से अपने शिशु की भावी जीवन की परिकल्पना करती है। वह उसकी तुलना चाँद, सूरज, राजा, रानी आदि से करती है। कल्पना लोरी का महत्वपूर्ण अंश है।

सोज्या–सोज्या,
लोरी लोरी लापरी।
गुदावे टूटी टापरी,

नाट्यकीयताः अवस्था की नकल करना ही नाटक है। हरियाणवीं लोरी में नाटकीयता एक महत्वपूर्ण अंश है, इसमें लोरी प्रस्तुत करने वाला या करने वाली नाटकीयता का सहारा लेती है।

छी छी छी छी कौआ खाए,
दूध मलाई भैया खाए।

लोकविश्वासनीयताः लोरी के अन्तर्गत हरियाणवीं लोकजीवन में घटित होने वाली घटनाओं, परिस्थितियों, संस्कारों, लोकमान्यताओं, लोकविश्वासों आदि का समावेश देखने को मिलता है।

लाला रे लाल मणियारे,
अस्सी गज का तणियारे।

आंचलिकताः लोरियां सभी अँचलों में, सभी माताओं के आँचलों में पोषित होती रहती हैं, खादर हो या बांगर, अहीरवाल हो या ब्रज, कश्मीर हो या कन्याकुमारी हर एक स्थान पर आँचलिक लोकविश्वासों, मान्यताओं, भाषा, बोली, संस्कारों एवं परम्पराओं के अनुसार लोरियां गायी जाती है।

मेरे सोज्या मुन्ना रे....,
मेरे सोज्या राजा रे....,

ध्वन्यात्मकताः लोरियों में नैर्सिगिक तौर पर ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो मूलतरू संगीतमय अभिव्यक्ति की प्रस्तुति करते हैं जैसे–टाल्ली, छनण, कुक्कड़म, झल्लड़–मल्लड़, घम्मड़, छमक–छमक, ठमक–ठमक, छुन्नक–छुन्नक, लल्ला–लल्ला लोरी आदि।

खल खल खोटा,
तेरा मामा मोटा।

तुकान्तताः लोरी का यदि आकार की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाये तो यह ज्यादा बड़ी नहीं होती। अधिकत्तर लोरियां दो चार एवं छह पंक्तियों तक ही सीमित होती है। एक पंक्ति में तीन या चार शब्द ही होते हैं।

गोरा भाई गोरा,
भाई का मुंह गोरा।

सौम्यताः सहज, सरल एवं सौम्य भाषा लोरी का खास विशेषता होती है। लोरी में कठोरी एवं असहज शब्दों का कोई स्थान नहीं होता, क्योंकि कठोर एवं असहज शब्द लोरी की संगीतात्मकता, ध्वन्यात्मकता एवं सहजाभिव्यक्ति में बाधक होते हैं।

निंदिया रानी आ जा,
मुन्ने को सुला जा।

मनोवैज्ञानिकताः एक नन्हा सा अबोध शिशु जिसने अभी सांसारिक रसों का रसास्वदन भी नहीं किया होता, जब वह पालने में पड़ा रो रहा होता है, तो संगीत की ध्वनि सुनते ही वह शांत हो जाता है। शायद यही कारण है कि बहुधा मातायें अपने शिशुओं को अर्थपूर्ण या निरर्थक शब्दों को मधुर स्वर में गुनगुनाते हुए, उन्हें सुलाती या रोते हुए को चुप कराती देखी जा सकती हैं।

बोल्लो भाई बोल्लो,
चंदा सा मुंह खोल्लो।

समन्वयताः लोरी के अन्तर्गत स्वर, लय और शब्द आदि में परस्पर समन्वयता देखने को मिलता है। यही समन्वयता लोरी को सामान्य गीतों से अलग करती है। लोरी का गायन करने वाली माँ को स्वर, लय, शब्द आदि के विषय में अधिक ज्ञान नहीं होता।

लल्ला लल्ला लोरी,
दूध की कटोरी।

प्रतीकात्मकताः शिशु के दैनिक जीवन से लोरी का घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रातरू आंख धोते समय, स्नान कराते समय, पानी के छींटे मारने की घटनां लोरी के शब्दों का रूप ले लेती है। माँ उससे बतियाना चाहती है, लेकिन शिशु तो किलकारी की ध्वनि उत्पन्न करता है।

श्री राम झुलै पालणा,
ए झुलाओ मेरी सजणी।

सन्दर्भ सूचि

1. बिमला कौशिक, ला–ला लोरी आशा प्रकाशन, करोल बाग, नई दिल्ली, सन् 1992
2. ओमप्रकार सिंहल, हिन्दी बाल–साहित्य परम्परा और प्रयोग, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली सन् 1992
3. कालिका प्रसाद, वृहद हिन्दी कोश ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, सम्वत् 2020
4. रामानन्द तिवारी, हमारी जीवंत संस्कृति, सन् 2008
5. महासिंह पूनिया, हरियाणवीं संस्कृति का बदलता स्वरूप आलेख, पत्रिका म्हारा हरियाणा, हरियाणा साहित्य अकादमी, अंक, नवम्बर 2008
6. करुणापति त्रिपाठी, लघु हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारणी सभा, कांशी सं. 2021
7. जयपाल सिंह राठौर, राजस्थान लोरी विशेषांक, लूर, अंक, 2005
8. रामलाल, सम्मेलन पत्रिका, लोकसंस्कृति अंक पृ. 85 सन् 2008
9. महासिंह पनिया, हरियाणवीं लोरियां लेख हरिगंधा, हरियाणा साहित्य अकादमी प्रकाशन, मई 2009
10. सूरदास, सूरसागर, बाल–लीला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 1994
11. नवरत्न पांडे, दादरी (भिवानी), साक्षात्कार, अक्तूबर, 2009
12. नवरत्न पांडे, हरियाणवीं लोरियां, आलेख दैनिक जागरण, सन् 14 मई, 2002
13. दरियावसिंह मलिक, उग्रा खेड़ी, पानीपत, एक साक्षात्कार, अक्तूबर 2009
14. छन्नो देवी, डिड़वाड़ी (पानीपत), एक साक्षात्कार, जून 2009
15. संतरा, धर्मपत्नी सत्यानारायण, जिला झज्जर, एक साक्षात्कार जून 2009
16. शंकरलाल यादव, हरियाणा प्रदेश का साहित्य, हिन्दुस्तानी अकादमी इलाहाबाद, सम्वत् 2026